विचार बिन्दु

व्यस्त मनुष्य को आंसू बहाने का अवकाश नहीं। –बायरन

भगवान को तो राजनीति से दूर रखिये : सुप्रीम कोर्ट

तिरूमाला तिरूपति देवस्थानम (टीटीडी) देश का आन्ध्रप्रदेश सरकार द्वारा प्रबन्धित एक स्वतंत्र सरकारी ट्रस्ट है। यह ट्रस्ट तिरूमाला में तिरूपति वैंकटेश्वर मंदिर को मेनेज करता है, उसका प्रबन्धन करता है। तिरूमाला दुनियां का सबसे धनी तीर्थ स्थल है। इसे भगवान वैंकटेश्वर का निवास कहा जाता है। यह शेषचलम पहाडियों के ऊपर है। तिरूमाला मंदिर रोम के वेटिकन शहर के बाद दूसरे स्थान पर है। तिरूपति मंदिर का दूसरा नाम श्री प्रसन्ना वैंकटेश्वर मंदिर है। इसे तिरूमाला मंदिर, तिरूपति मंदिर, तिरूपति बालाजी मंदिर भी कहते हैं।

भगवान वैंकटेश्वर को लड्डूओं (पनयारम) का प्रसार (जिसे प्रसादम कहते हैं चढ़ाया जाता है)। प्रसादम के दूषित होने का मामला केवल आन्ध्रप्रदेश में ही नहीं सारे देश में फैल रहा है। बहुसंख्यक हिन्दू समाज की धार्मिक भावना से यह विवाद जुड चुका है। यह मुद्दा अत्यधिक भावनात्मक बन चुका है। यह कहा जाता है कि प्रसादम (लड्डूओं) में पशु चर्बी मिलाई गई है अत: यह दूषित है, प्रसाद के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता। प्रसाद एक प्राइवेट कम्पनी बनाती है। तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) सुप्रीमो और आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू द्वारा प्रसाद के दूषित होने के विषय को प्रथम बार उठाया है तथा उनके गठबंधन पार्टनर व उपमुख्यमंत्री फिल्म स्टार पवन कल्याण द्वारा प्रमुखता से शिखर पर पहुंचाया है। कई जांच कमेटियां जांच कर रही हैं। जैसे विवाद में तेजी आ रही है उसमें कई कमियां और कमजोरी दिखाई दे रही हैं। कई परस्पर विरोधी वक्तव्य सुनने को मिल रहे हैं। इस कारण आन्ध्र की नई सरकार विवाद के घेरे में दिखाई देती है। विवाद निपटाने के हेतु इनका सही व स्पष्ट उत्तर मिलना आवश्यक है। प्रथम और मुख्य प्रश्न है कि यदि लैब को भेजे गये सैम्पल का टैस्ट जुलाई 2024 में हुआ तो टैस्ट की रिपोर्ट सितम्बर के उत्तरार्ध में सार्वजनिक क्यों की गई? यह भी प्रश्न उठाया गया है कि सैम्पल केवल एक ही लैब को क्यों भेजे गये हैं। यह भी प्रश्न उठाया गया है कि एक फर्म द्वारा सप्लाई किये गये घी के चार टैंकरों में मिलावट पाई गई और इन टैंकरों के घी का प्रयोग प्रसादम बनाने के लिये काम में नहीं लिया, तो पूर्व मुख्यमंत्री वाय एस जगमोहर रेड्डी को कैसे दोषी कहा जा सकता है। आरोप यह है कि रेड्डी के काल में दूषित घी प्रयुक्त हुआ था तो उस समय किसी ने शिकायत क्यों नहीं की ?

मंदिर के कई नियम हैं, आस्था के लिये घोषणा भी होती है। क्या इनकी पालना सही हो रही है?

मंदिर प्रांगण की शुद्धता की सभी प्रक्रियां भी पूरी हो चुकी है। जांच कमेटी भी बनाई है। एसआईटी का भी गठन है। किन्तु आश्चर्य तो यह है कि सबके होते हुये भी तथा बडी पब्लिसिटी के उपरान्त भी भक्तजनों की भीड तथा लड्डूओं की मांग व बिक्री ऊंची ही बनी हुई है। अत: एक वर्ग यह कहता है कि जनता ने तो इसे नकार दिया है। अन्य वर्ग कहता है हिन्दू एकता को जीवित करने के हेतु संभवत: ऐसा हो रहा है।

वर्तमान में यह देखा जा रहा है कि कोई भी घटना हो, लिबर्टी, जीने का अधिकार, समानता का अधिकार अथवा अनुच्छेद 25/26 के तहत् धार्मिक अधिकार बडे-2 एडवोकेट प्रत्येक ऐसे मामलों को सीधे सुप्रीम कोर्ट में ले जाते हैं क्योंकि जनता के मूल अधिकारों का प्रश्न है और सुप्रीम कोर्ट को मूल अधिकारों की रक्षा का अधिकार दिया है। हाँ कुछ समय पूर्व तक सुप्रीम कोर्ट Alternate Remedy के नाम पर हाईकोर्ट में पहले जाने की सलाह देता रहा है। वर्तमान में गिरफ्तारी के विरूद्ध बेल का प्रार्थना पत्र न देकर गिरफ्तारी को स्वतंत्रता के मूल अधिकार के संरक्षण हेतु सुप्रीम कोर्ट सुनवाई कर रहा है। अनुच्छेद 25/26 के तहत कई याचिकायें सुप्रीम कोर्ट में पेश हुई हैं, चूंकि इनमें बहुसंख्यक हिन्दू समाज के देवता के प्रति आस्था का प्रश्न है, सुप्रीम कोर्ट सुनवाई कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट के समझ में स्पष्ट आ रहा है कि राजनेतागण भगवान को भी राजनीति में घसीट रहे हैं, दुखी हैं, किन्तु क्या करें। माननीय न्यायाधीश बी गवई और न्यायाधीश के.बी. विश्वनाथ की बैंच ने चन्द्राबाबू नायडू को डाँट भी लगाई है।

सुप्रीम कोर्ट की खण्डपीठ के समक्ष संभवत: 5 पिटीशन्स दूषित प्रसादम (दूषित लड्डूओं) के विषय में पेश की जा चुकी हैं। मामला देश की नागरिकों की धार्मिक आस्था का है। आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्राबाबू नायडू ने एक लैब की रिपोर्ट को सार्वजनिक करते हुये आरोप लगाया है कि पूर्व की YSRCP सरकार ने तिरूपति मंदिर में बनने वाले लड्डूओं के हेतु उस दूषित घी का प्रयोग किया है, जिसमें foreign fats (including beef and fish oil) थे। जो हिन्दूओं के खाने की वस्तु को भ्रष्ट करते हैं। इन पिटीशन्स में प्रार्थी ने जांच की जावे विशेषकर उन हिन्दू मंदिरों की जो सरकार के अधीन काम करते हैं।

प्रसाद को दूषित कर देश के प्रसिद्ध सनातनी मंदिर की पवित्रता, विश्वसनीयता व लोक प्रियता को खत्म करने का प्रयास माना जा रहा है। देश में मिलावट के विषयों का कानून भी है, उसे कठोरता से लागू करना आवश्यक है। मंदिरों के प्रसाद, बच्चों के मिड-डे मील, अस्पतालों की केन्टीन का खाना दूषित हो, इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इन पांचों पिटीशन्स में प्रसादम में पशु चर्बी की मिलावट की स्वतंत्र जांच की मांग की है। इनमें भाजपा के नेता सुब्रमण्यम स्वामी, राज्यसभा सांसद और तिरूपति तिरूमाला देवस्थान के पूर्व चेयरमेन वाय सुब्बारेडी, इतिहासकार सम्पत, आध्यात्मिक गुरू दुष्यन्त श्रीधर व पत्रकार सुरेश चव्हाण हैं।

इन पांचों पिटीशन्स पर दिनांक 30.9.2024 को सुनवाई हुई थी ओर अब 10 अक्टूबर 2024 को सुनवाई होगी।

जो पिटीशन बाई वी सुब्बारेडी ने की है उसमें उनका कहना है कि जब भी कोई गाडी गाय का घी लेकर आती है, तो उसका सेम्पल लिया जाता है और घी का सेम्पल लेकर टैस्ट किया जता है। यदि घी सही पाया गया तो ही लड्डू बनाये जाते हैं।

यह मंदिर भगवान विष्णु के एक स्वरूप भगवान वैंकटेश्वर को समर्पित है जिसके बारे में माना जाता है कि वे मानव जाति को कलयुग की परीक्षाओं और परेशानियों से बचाने के लिये पृथ्वी पर प्रकट हुये हैं। अत: इस स्थान का नाम कलयुग बैकुण्ठ भी है।

दिनांक 30.09.2024 की बहस जो उपरोक्त पाचों पिटीशनस के संबंध में हुई बहुत गम्भीर थी। खण्डपीठ के दोनों माननीय न्यायाधीश ऐसा लगता था शायद चन्द्राबाबू नायडू के तौर तरीकों से नाराज थे। उन्होंने नायडू को फटकार लगाते हुये कहा कि नायडू ने दूषित घी के लड्डू के मामले में जो सार्वजनिक बयान दिया वह गलत था, क्योंकि बिना जांच की रिपोर्ट के यह कहना कि घी दूषित था, गलत है अनुचित था। बैंच ने कहा, ''हम अपेक्षा रखते हैं कि भगवान को राजनीति से दूर रखा जावे''। खण्डपीठ ने जोर देकर कहा कि ''उच्च संवैधानिक सत्ता (नायडू) के लिये ऐसा बयान देना उचित नही था''। क्योंकि करोडो लोगों की भावना को वह प्रभावित करने वाला था। खण्डपीठ ने सोलिसिटर जनरल तुषार मेहता से सहयोग करने का प्रस्ताव किया कि वे केन्द्रीय सराकर से बातकर पता लगावें कि केन्द्र किस प्रकार की जांच कराना चहाता है। क्या केन्द्र अब तक एसआईटी अथवा अन्य जांच से ही सन्तुष्ट है कि ये प्रसादम को दूषित करने वालों को सजा दिला सकते हैं, अथवा जांच के लिये कोई बडी जांच कमेटी आवश्यक है। केन्द्र सरकार की स्पष्ट राय आगामी तारीख तक कोर्ट को पता हो जानी चाहिये।

यह भी खण्डपीठ को जानकारी दी गई है कि केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने लड्डू प्रसादम के लिये घी की आपूर्ति करने वाली कम्पनी को भी कारण बताओ नोटिस दे दिया है।

जस्टिस गवई ने पूछा कि क्या कोइ ठोस सबूत हैं कि प्रसादम लड्डूओं में जानवरों की चर्बी वाला घी इस्तेमाल हुआ था? यदि नहीं तो फिर कैसे आपने प्रेस में वक्तव्य दे दिया? खण्डपीठ ने यह भी पूछा कि जिन लड्डूओं के कारण जांच के आदेश दिये हैं क्या उन्हें जांच के लिये लैब भेजा गया था?

तुषार मेहता ने खण्डपीठ को यह विश्वास दिलया है यह विवाद आस्था का है, अत: यह बर्दास्त नहीं होगा कि पावन मंदिर का प्रसाद दूषित घी से बना हो।

दिनांक 3.10.2024 को सर्व सम्मति से यह स्वीकार किया जा सकता है कि एक हाई पावर कमेटी बनाई जावे जो प्रसादम के लड्डूओं को दूषित पदार्थों (पशु चर्बी) के घी से बनाये गये थे अथवा नहीं इस पर अपनी रिपोर्ट कोर्ट में प्रस्तुत करे। यह कमेटी यह भी प्रस्ताव देवेगी कि दोषी व्यक्तियों को क्या सजा दी जावे तथा भविष्य में ऐसी घटना न हो इस पर सुझाव भी देवे। कमेटी यह भी सुझाव देगी कि आस्था के प्रश्न पर कोई राजनीतिक करण नहीं होगा और कम से कम भगवान को राजनीति से दूर ही रखा जावेगा।

सुप्रीम कोर्ट की माननीय खण्डपीठ (बैंचों) ने खुले शब्दों में भगवान के प्रसाद को दूषित किये जाने के प्रसंग को गम्भीरता से लिया है। इस विषय के राजनीति करण के खतरे पर भी अपनी राय अभिव्यक्त की है। दोषी व्यक्तियों के विरूद्ध कार्यवाही होगी इसमें कोई शंका नहीं है।

भगवान का प्रसाद ग्रहण करना और उसके द्वारा भगवान की कृपा का पात्र बनना हमारी संस्कृति की उदारता का लक्षण है। दूसरी ओर देखें तो पायेंगे कि हम भक्ति के नाम पर इतने गिर गये हैं कि प्रसाद को दूषित करने से भी नहीं चूकते। हम यह भी मानते हैं कि भगवान का प्रसाद सात्विक हो। प्रसाद को दूषित कर देश के प्रसिद्ध सनातनी मंदिर की पवित्रता, विश्वसनीयता व लोक प्रियता को खत्म करने का प्रयास माना जा रहा है। प्रसाद में मांसाहारी तत्व मिलाकर दूषित करना आदमी की नीचता व पशुता की सीमा है। देश में मिलावट के विषयों का कानून भी है, उसे कठोरता से लागू करना आवश्यक है। प्रसाद में आद्रता होगी तो फफूंद आना स्वाभाविक है अत: ऐसे प्रसाद का पेकिंग ऐसा हो ताकि कम से कम तीन माह तक शुद्ध खाने योग्य बना रहे। मंदिरों के प्रसाद, बच्चों के मिड-डे मील, अस्पतालों की केन्टीन का खाना दूषित हो, इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। अपराधी को कठोरतम दण्ड दिया जावे।

भगवान वैंकटेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे सबको सन्मति प्रदान करें। दोषी को पापों की सजा दें।

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

जैव-क्रांति - बायो ई-3 नीति

प्रो. अशोक कुमार

भारत सरकार ने बायोटेक्नॉलॉजी फॉर इकॉनमी, एनवायरनमेंट एंड एंप्लॉयमेंट यानि बायो ई3 नीति के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया है । यह फैसला बेहतर बायोमैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए लिया गया है। बायो ई3 योजना का लक्ष्य रिसर्च, नए बिज़नेस और इनोवेशन को बढ़ावा देना है। यह योजना पर्यावरण के अनुकूल विकास पर ध्यान केंद्रित करेगी, जिससे रोज़गार के नए अवसर पैदा होंगे और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

बायो ई3 नीति: एक संक्षिप्त परिचय– बायो ई3 नीति एक ऐसी नीति है जो जैव ईंधन के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है। 'ई3' का मतलब है 'तीन ई': ऊर्जा, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था। इस नीति का मुख्य उद्देश्य है:–

पेट्रोलियम उत्पादों पर निर्भरता कम करना: जैव ईंधन को पारंपरिक ईंधन के विकल्प के रूप में विकसित करके, देश की पेट्रोलियम उत्पादों पर निर्भरता को कम किया जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण: जैव ईंधन कार्बन उत्सर्जन को कम करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद मिलती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना: जैव ईंधन के उत्पादन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और किसानों की आय में वृद्धि होती है।

बायो ई3 नीति के प्रमुख बिंदु–

जैव ईंधन के प्रकार: इस नीति के तहत विभिन्न प्रकार के जैव ईंधन जैसे कि इथेनॉल, बायोडीजल और जैव सीएनजी को बढ़ावा दिया जाता है।

उत्पादन और मिश्रण: जैव ईंधन का उत्पादन कृषि अपशिष्टों, जैविक पदार्थों और अन्य नवीकरणीय स्त्रोतों से किया जाता है। इसे पारंपरिक ईंधन के साथ मिलाकर उपयोग किया जाता है।

लक्ष्य: इस नीति का लक्ष्य है कि एक निश्चित समय सीमा तक जैव ईंधन के मिश्रण को एक निश्चित प्रतिशत तक बढ़ाया जाए।

सब्सिडी और प्रोत्साहन: सरकार जैव ईंधन उत्पादकों को सब्सिडी और अन्य प्रोत्साहन प्रदान करती है ताकि उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके।

बायो ई3 नीति के लाभ

ऊर्जा सुरक्षा: पेट्रोलियम उत्पादों पर निर्भरता कम करके देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत बनाया जाता है।

पर्यावरण संरक्षण: कार्बन उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद मिलती है।

स्वदेशी उत्पादन: जैव ईंधन का उत्पादन देश के भीतर ही किया जाता है जिससे विदेशी मुद्रा की बचत होती है।

ग्रामीण विकास: जैव ईंधन के उत्पादन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और किसानों की आय में वृद्धि होती है।

बायो ई3 नीति और किसान– बायो ई3 नीति किसानों के जीवन में कई तरह से बदलाव ला सकती है। यह नीति किसानों को कई अवसर प्रदान करती है, साथ ही कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ सकता है। आइए देखें कि यह नीति किसानों को कैसे प्रभावित कर सकती है:–

सकारात्मक प्रभाव– आय में वृद्धि: जैव ईंधन फसलों की खेती से किसानों को पारंपरिक फसलों की तुलना में अधिक आय प्राप्त हो सकती है। सरकार द्वारा दिए जाने वाले प्रोत्साहन और न्यूनतम समर्थन मूल्य भी किसानों की आय में वृद्धि करने मं मदद कर सकते हैं।

फसल विविधीकरण: किसान एक ही फसल पर निर्भर रहने के बजाय विभिन्न प्रकार की जैव ईंधन फसलों की खेती कर सकते हैं, जिससे जोखिम कम होगा।

ग्रामीण विकास: जैव ईंधन उद्योग के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा होंगे और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

तकनीकी ज्ञान में वृद्धि: जैव ईंधन फसलों की खेती के लिए किसानों को नई तकनीकों के बारे में सीखना होगा, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी।

चुनौतियाँ

जमीन का सीमित होना: जैव ईंधन फसलों की खेती के लिए अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता होगी, जो कई किसानों के लिए एक चुनौती हो सकती है।

सिंचाई की समस्या: कुछ जैव ईंधन फसलों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है, जो सूखाग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले किसानों के लिए एक समस्या हो सकती है।

बाजार की अस्थिरता: जैव ईंधन के बाजार में अस्थिरता होती है, जिससे किसानों को कीमतों में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है।

तकनीकी ज्ञान की कमी: कई किसानों के पास जैव ईंधन फसलों की खेती के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान की कमी होती है।

बायो ई3 नीति के पर्यावरणीय लाभ– ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी: जैव ईंधन जीवाश्म ईंधन की तुलना में कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जित करते हैं। जब जैव ईंधन जलाया जाता है, तो कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है, लेकिन पौधे प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं।

वायु प्रदूषण में कमी: जैव ईंधन जीवाश्म ईंधन की तुलना में कम हानिकारक प्रदूषक उत्सर्जित करते हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत: जैव ईंधन एक नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत है, जिसका अर्थ है कि इसे लगातार पुन: उत्पन्न किया जा सकता है।

बायो ई3 नीति के पर्यावरणीय चुनौतियाँ

जंगलों का कटाव: बड़े पैमाने पर जैव ईंधन उत्पादन के लिए जंगलों को साफ किया जा सकता है, जिससे जैव विविधता कम होती है और कार्बन सिंक कम हो जाता है।

जल संसाधनों पर दबाव: जैव ईंधन फसलों की सिंचाई के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है, जिससे जल संसाधनों पर दबाव बढ़ सकता है।

मृदा क्षरण: लगातार एक ही प्रकार की फसल उगाने से मृदा की गुणवत्ता खराब हो सकती है और मृदा क्षरण हो सकता है।

रसायनों का उपयोग: जैव ईंधन उत्पादन में अक्सर रसायनों का उपयोग किया जाता है, जो पर्यावरण को प्रदूषित कर सकते हैं।

अन्य फसलों के लिए भूमि का कम होना: जैव ईंधन फसलों के लिए भूमि का उपयोग करने से खाद्य फसलों के लिए उपलब्ध भूमि कम हो सकती है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर खतरा पैदा हो सकता है।

पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के उपायसतत जैव ईंधन उत्पादन: ऐसे जैव ईंधन का उत्पादन किया जाना चाहिए जो पर्यावरण के लिए हानिकारक न हो।

गैर-खाद्य फसलों का उपयोग: खाद्य सुरक्षा को प्रभावित किए बिना जैव ईंधन उत्पादन के लिए गैर-खाद्य फसलों और कृषि अपशिष्टों का उपयोग किया जाना चाहिए।

जैव विविधता का संरक्षण: जैव ईंधन उत्पादन के दौरान जैव विविधता का संरक्षण किया जाना चाहिए।

जल संरक्षण: जैव ईंधन उत्पादन में पानी के उपयोग को कम करने के लिए नई तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए।

मृदा संरक्षण: मृदा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए उचित खेती के तरीकों का उपयोग किया जाना चाहिए।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

पशु-पक्षियों का जीवन बचाकर ''कर्म योगी'' की भूमिका निभा रहे हैं गोविंद भारद्वाज

वर्ष 2013 से अब तक हजारों पशु-पक्षियों को जीवनदान दे चुके हैं भारद्वाज

कोटपूतली, (निसं)। यूं तो वर्तमान समय में सरकारी नौकरी मिलने के बाद लोग अपने आप को किसी खुदा से कम नहीं समझते। किन्तु सरकारी नौकरी मिलने के बाद अपने दायित्वों का पूर्णरूप से निर्वहन करे वह वास्तव में किसी कर्म योगी से कम नहीं होता।

आज विश्व पशु दिवस है और हम बात कर रहे हैं एक ऐसे कर्मयोगी की जिसने नौकरी लगने के बाद अपना संपूर्ण जीवन ही पशु पक्षियों के नाम दान कर दिया। यूं तो एल एस ए के पद पर पशु चिकित्सा विभाग में देश भर में बड़ी संख्या में लोग काम कर रहे हैं, लेकिन पावटा तहसील के ग्राम भांकरी निवासी पंकज भारद्वाज पैसे की कमाई नहीं अपितु जीवों की सेवा कर सच्ची ईश्वरीय कमाई कर रहे हैं। जो दिन हो या फिर रात बस एक फोन की घंटी बजी बिना अपनी और अपने परिवार की परवाह किए उठाई बाइक और चल देते हैं। अपने कर्म पथ पर बेजुबान घायल व बीमार पशु पक्षियों का उपचार करने। इतना ही नहीं भारद्वाज विलुप्त होते जीवों को बचाने मे भी जुटे रहते हैं। इस कार्य में पूरा मार्गदर्शन उनके बड़े भाई प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पंडित डॉ. गौरीशंकर शर्मा का है।

■ बस फोन की घंटी बजी उठाई बाइक और चल देते हैं गोविंद भारद्वाज

भारद्वाज की नियुक्ति पशुपालन विभाग में 8 अक्टूबर 2013 से पशुधन सहायक के रूप में हुई थी। भारद्वाज ने अब तक के अपने सेवा काल में 27218 गाय, 2666 नील गाय, 2123 मोर, 203 बन्दर, 108 लंगूर, दो जरख, दो हिरण, तीन बाज, दो बिज्जू, एक उल्लू, दो गीदड़, आठ सौ से अधिक छोटे परिन्दों का उपचार किया। इसके अलावा 340 पशुओं के ऐसे बच्चों का निप्पल एवं बोतल से दूध पिलाकर पालन पोषण किया है, जिनकी मां मर गयी या जंगल में छोड़कर चली गई। जब ये बच्चे घास खाने लगते है तो भारद्वाज द्वारा इन्हें जंगल में छोड़ दिया जाता है। इन बच्चों को रोजाना सुबह एवं शाम बोतल तथा निप्पल से दूध पिलाते हैं। इस कार्य में बडे भाई डॉ. गौरीशंकर शर्मा एवं भतीजे मोहित शर्मा एवं भतीजी दिव्या शर्मा भी रोज अपनी सेवा देते हैं।

भारद्वाज ने बताया कि मेरी माता का बचपन में स्वर्गवास हो गया था। अत: इन वन्य जीवों के बिना मां के बच्चों की सेवा करके अपने जीवन को सार्थक बना लूं। इसके अलावा राष्ट्रीय राजमार्ग 248 अत्यधिक व्यस्तम राजमार्ग है जिस पर आये दिन सड़क हादसों मे घायल होकर गायों के पैर टूट जाते हैं तो भारद्वाज उनके प्लास्टर कर उनको चलने योग्य बनाते हैं। इन्होंन `6523 गोवंशों के प्लास्टर कर उनको चलने योग्य बनाया है।

शारदीय नवरात्र आरंभ, घर-घर हुई घट स्थापना

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर शहर में गुरूवार को शारदीय नवरात्र पर घर-घर में घट स्थापना हुई। इसके साथ ही शारदीय नवरात्र का पर्व आरंभ हो गया। इस बार तिथि बढ़ने से नवरात्र का पर्व दस दिन तक रहेगा। 12 अक्टूबर को दशहरा मनाया जाएगा। मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थित मां चामुण्डा माताजी मंदिर में अलसुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी गई। इस बार महिलाओं की संख्या कुछ ज्यादा ही नजर आई।

नवरात्र आरंभ होने के साथ ही शाम से शहर में गरबा महोत्सव की धूम भी शुरू हो गई। शहर के कई गली-मोहल्लों में लोगों ने अपने अपने स्तर पर गरबा-डांडिया महोत्सव का आयोजन रखा है। इसको देखते हुए पुलिस ने सुरक्षा की दृष्टि से माकूल बंदोबस्त किये हैं। गरबा स्थलों पर पुलिस की तैनाती भी रहेगी।

गुरुवार को शुभ मुहूर्त में अलग-अलग समय पर लोगों ने अपने अपने घरों एवं व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठानों में घट स्थापना कर मां की विशेष पूजा अर्चना की। मेहरानगढ़ दुर्ग में दुर्गा सप्तशती पाठ का आयोजन भी शुरू हो गया। मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए विशेष इंतेजामात किए गए है। मंदिर परिसर में सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। मंदिर के तौर पर लोग फूल-मालाएं, नारियल के गोटे एवं मीठा प्रसाद लेकर जा सकते हैं। घरों में भी यज्ञ हवन करवाए गए। साथ ही कई लोगों ने अपने नए घर में प्रवेश किया और कई प्रतिष्ठानों का भी शुभ मुहूर्त आज हुआ। जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थित चामुंडा माता मंदिर में भी विशेष आयोजन हो रहे हैं। यहां पर सुबह 7:30 बजे महाआरती की गई। मंदिर में दर्शन के लिए सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ नजर आई। श्रद्धालुओं ने दर्शन पूजन कर खुशहाली की मंगल कामना की। यहां पर माता का विशेष श्रृंगार किया गया। मंदिर में दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए बैरिकेडिंग की गई है।

टैलेंट आइडेंटिफिकेशन गोल्फ टूर्नामेंट का आयोजन

जयपुर। 100 मेडल्स टार्गेटेड फाउंडेशन द्वारा एक टैलेंट आइडेंटिफिकेशन गोल्फ टूर्नामेंट का आयोजन गुरुवार को जयपुर मिलिट्री स्टेशन में किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवा बालक-बालिकाओं और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के युवा गोल्फ खिलाड़ियों के बीच आउटडोर खेलों को बढ़ावा देना रहा। टूर्नामेंट में कैडीज़ और बच्चों ने अपने गोल्फ कौशल का प्रदर्शन करते हुए उत्साहपूर्वक भाग लिया। दक्षिण पश्चिमी कमान के आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने विजेताओं को सम्मानित किया और सभी गोल्फ खिलाड़ियों को उनकी खेल भावना और कौशल के लिए बधाई दी। भारतीय सेना के भूतपूर्व सैनिक मेजर डीपी सिंह, भारतीय ब्लेड रनर भी एक विशिष्ट अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल हुए और अपनी अद्भुत कहानी से प्रतिभागियों को प्रेरित किया। टूर्नामेंट तीन श्रेणियों में आयोजित किया गया था, पहला वर्ग-17 वर्ष से कम आयु के बालक और 20 वर्ष से कम आयु की बालिकाएं, दूसरा वर्ग 16-25 वर्ष के बीच के कैडी और तीसरा वर्ग 26-29 वर्ष के बीच के सीनियर कैडी। बच्चों के वर्ग की विजेता 81 ग्रॉस स्कोर के साथ शिक्षा जैन रही, जूनियर कैडी वर्ग के विजेता 74 ग्रॉस स्कोर के साथ कैडी शिवम गुप्ता रहे और सीनियर कैडी के विजेता जीशान रहे जिन्होंने 64 ग्रॉस स्कोरअंकित किया। ओवरआल टूर्नामेंट के चैंपियन लखनऊ गोल्फ कोर्स के जीशान रहे।

दक्षिण पश्चिमी कमान के आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने विजेताओं को सम्मानित किया।

राशिफल शुक्रवार 4 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र दिन 10:10 तक, शिव योग दिन 11:21 तक, बालव करण प्रात: 7:24 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि दिन 10:10 तक है। आज श्री नारद जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:20 तक, लाभ-अमृत 7:20 से 10:42 तक, शुभ 12:23 से 2:04 तक, चर 5:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:08

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
घर-परिवार में कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।